मरियम-ज़मानी का मकबरा
(लगभग 1623-27 ई॰)

मरियम-ज़मानी आमेर (जयपुर) के कछवाहा राजा भारमल की पुत्री थी। 1562 ई॰ में उसका विवाह अकबर से हुआ। उसने 1569 ई॰ में फतेहपुर सीकरी में सलीम को (जो बाद में जहाँगीर के नाम से गद्दी पर बैठा) जन्म दिया। तब अकबर ने उसे 'मरियम-ज़मानी' (अर्थात् विश्व पर दया रखने वाली) का खिताब दिया। उसकी मृत्यु आगरा में 1623 ई॰ में हुई और उसके पुत्र जहाँगीर ने इस मकबरे का निर्माण 1623 और 1627 ई॰ के मध्य कराया।

वास्तव में मूल रूप से यह एक खुली हुई, लोदीकाल की बारहदरी थी। मुगलों ने इसे अपनाकर इसमें मकबरा बना दिया। इसके लिए केन्द्रीय कक्ष के नीचे एक तहखाना बनाया गया, इमारत की चारों मुख़ारों को लाल पत्थर के उत्कीर्ण फलकों और छज्जों से दुबारा बनाया गया, चारों कोनों पर दुछत्तियाँ बनाई गयीं और ऊर्ध्वरचना को भी छत्रियों और छपरखटों से पुनः बनाया गया।

यह मकबरा चतुरास्र है और बाग के बीचोंबीच स्थित है। इसकी तलयोजना में प्रत्येक तीसरे महराब से आरपार हर दिशा में दो-दो विस्तीर्ण गलियारे बने हैं। पूर्व-पश्चिम और उत्तर-दक्षिण के इन गलियारों

से इस प्रकार सम्पूर्ण इमारत नौ भागों में बँट जाती है। मध्य में एक बड़ा चतुरास्र भाग, चारों कोनों पर चार छोटे-छोटे चतुरास्र भाग और चारों पार्श्वों के मध्य में चार आयताकार भाग। चौड़े महराब और गुम्बदी छतें प्रशस्त पायों पर टिकायी गयी हैं। संरचना ईंट और चूने की है, जिस पर गजकारी की गयी है।

प्रत्येक मुखार के मध्य में एक आयताकार किनारीदार महराब है जो कुछ आगे बढ़ा हुआ है। प्रत्येक स्कन्ध में तीन महराब और फिर कोने पर दुहैरे महराब (एक ऊपर, एक नीचे) बने हैं जिनमें दुछत्ती बनायी गयी है। महराब बिन्दुदार हैं। स्कन्धों के ऊपर छज्जे लगे हैं।

इस मकबरे में प्रस्तरयुक्त तीन कब्रें हैं: एक तहख़ाने में स्थित मूल कब्र पर कब्रगाह में है, दूसरी उसके ऊपर भूमितल पर और तीसरी छत पर है। ऊपर की दोनों कब्रें मात्र प्रतीकात्मक हैं।

ऊर्ध्वरचना में इमारत के चारों कोनों पर चार विशाल अष्ट्रास्र छत्रियाँ हैं और चारों दिशाओं के मध्य में चार आयताकार छपरखट हैं। लाल पत्थर की बनी प्रत्येक अष्ट्रास्र छत्री चतुरास्र जगती पर भव्यरूप से सुशोभित हैं। इसके अन्दरूनी उत्तरंगों और बाहरी छज्जों को संभालने के लिए बड़े सुन्दर मदलों (तोड़ों) का प्रयोग किया गया है। प्रत्येक खम्भे पर पाँच तोड़े हैं और इस प्रकार एक छत्री में 40 तोड़े सजाऐ गये हैं जो बड़ी विलक्षण बात है। प्रत्येक छपरखट आयताकार हैं और उसके आठों खम्भों पर भी ऐसे ही मदल लगाये गये हैं। ये छत्रियाँ और छपरखट मुखार का भी उतना ही प्रभावशाली अंग है जितना ऊर्ध्वरचना का। इनसे एक अत्यन्त सुन्दर नभरेखा बनती है और इमारत बिना गुम्बद के भी स्वयं में पूर्ण है। इस मकबरे का मुगलों के 'गुम्बद-विहीन' मकबरों में विशिष्ट स्थान है।